



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	14.9.22	4	1-2

HAU agri fair focuses on water crisis

Hisar: Haryana Agricultural University (HAU) vice-chancellor Professor B R Kamboj inaugurated a two-day agriculture fair at the institute on Tuesday. Highlighting the region's water problem, he said that there was over-exploitation of ground water in the wheat-paddy crop-cycle areas and it could lead to severe shortage of potable water soon. Lala Lajpat Rai University of Veterinary and Animal Sciences VC Dr Vinod Kumar Verma was the special guest.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	14-9-22	2	8

HAU honours 19 farmers

HISAR, SEPTEMBER 13

The Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) honoured 19 farmers of the state for their contribution in making farming a remunerative occupation by adopting innovative ideas, at the Krishi Mela, on the university campus, here today.

While addressing farmers at the event's inauguration, Vice-Chancellor Prof BR Kamboj said, "Our university has recognised their efforts in switching from traditional farming methods to modern technology and promoting crop diversification." He even talked about the importance of water conservation, and how an increasing consumption of water is resulting in overexploitation of ground water in the areas where wheat and paddy crops are grown, thereby leading to water table depletion. — TNS



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम उमर उजाला	दिनांक 14.9.22	पृष्ठ संख्या 2	कॉलम 7-8
---------------------------------	-------------------	-------------------	-------------

कृषि वैज्ञानिकों ने तैयार किए मसालों के पौधों के बीज

हिसार सोनाली मेथी से बढ़ेगी किसानों की कमाई

संदीप रामायण

मेथी की हिसार मनोहर
किस्म भी तैयार की

हिसार: हिसार सोनाली मेथी किस्म की भरपूर पैदावार से हरियाणा के किसान अब अपनी आय बढ़ा सकते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय सब्जी विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने हिसार सोनाली मेथी एचएम 57 की उन्नत किस्म का बीज तैयार किया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि हिसार सोनाली मेथी के पौधे सीधे व शीघ्र बढ़ते हैं। मेथी की दूसरी किस्म जैसे पूसा अली बॉचिंग की तुलना में हिसार सोनाली मेथी के दाने बड़े आकार के होते हैं। वहीं, हिसार सुगंध व हिसार आनंद धनिया से करीब दो किलोमीटर का क्षेत्र महकेगा।

हरियाणा के किसानों के लिए हिसार सोनाली मेथी का बीज एचएम हिसार में मिलेगा। मंगलवार को एचएम में आयोजित किसान मेले में यूनिवर्सिटी के सब्जी विज्ञान विभाग ने अपनी स्टॉल लगाकर किसानों को मसालों की खेती करने व उनके नए किस्म उन्नत बीजों की जानकारी दी।

एक एकड़ में होगी 8-10 क्विंटल पैदावार : एचएम सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. टीपी मलिक ने बताया कि हिसार सोनाली एचएम 57 किस्म की मेथी की खेती करके किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। इस मेथी की किस्म की खेती करने के लिए एक एकड़ में चार किलो बीज की बिजाई करनी होगी। करीब तीन महीने में



इन किस्मों के बीज
तैयार किए

हिसार सोनाली एचएम 57 मेथी, हिसार मनोहर मेथी, हिसार मेथी 273, हिसार अजवाहन 18, हिसार सीफ 143, हिसार भूमित डीएच 228 धनिया, हिसार सुगंध धनिया, हिसार आनंद धनिया।

फसल तैयार हो जाएगी। एक एकड़ में औसतन 8-10 क्विंटल की पैदावार होगी।

दो किलोमीटर दूर तक आबोहवा को सुगंधित करेगा हिसार सुगंध किस्म का धनिया : डॉ. टीपी मलिक ने बताया कि वैज्ञानिकों ने धनिये की तीन नई उन्नत किस्में हिसार सुगंध, हिसार आनंद व हिसार भूमित धनिया तैयार की हैं। हिसार आनंद डीएच 5 धनिया के पौधों में शाखाएं अधिक निकलती हैं। यह मध्य पछेती किस्म है। इसकी पैदावार 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ हो जाती है। उन्होंने बताया कि हिसार सुगंध डीएच 836 धनिया उन्नतशील किस्म है जिसे राष्ट्रीय स्तर पर अनुमोदित किया गया है। इसके गुच्छे बड़े, अधिक व मोटे दानों वाले होते हैं। यह किस्म 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ उपज देती है। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अमर उजाला

दिनांक
14-9-22

पृष्ठ संख्या
2

कॉलम
3-5

एचएयू में कृषि मेले का उद्घाटन, 10 हजार किसान पहुंचे प्रबंधन नहीं होने से 70% सिंचाई जल हो रहा है बर्बाद : कुलपति

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। फसलों की सिंचाई के लिए पानी अति आवश्यक है, लेकिन अत्यधिक दोहन के चलते सिंचाई के अलावा अब पेयजल पर भी संकट गहरा रहा है। जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल व्यर्थ बह रहा है। यह गंभीर विषय है। पानी का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे सुरक्षित रखा जा सकता है। यह कहना है चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का।

वे मंगलवार को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) के उद्घाटन अवसर पर किसानों को संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि बढ़ती खपत और गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भूजल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। कृषि मेले में करीब 10 हजार किसान पहुंचे थे।

टपका और फव्वारा विधि अपनाएं किसान : जल संरक्षण को समय की मांग बढ़ते हुए उन्होंने कहा



हिसार : कृषि मेले में सूक्ष्म सिंचाई के लिए लगाए प्रदर्शनी प्लांट को देखते किसान।

कि जल संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा विधि जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान की कम अवधि में पकने वाली किस्में व बासमती किस्में उगाकर पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता है। उन्होंने फसलों की उन्नत किस्मों के बीज की आपूर्ति का उल्लेख किया और बताया कि एचएयू की ओर से इन किस्मों का 35 हजार विक्टल बीज किसानों को दिया जाएगा।

प्रदेश के प्रगतिशील किसान सम्मानित



कृषि मेले में सम्मानित किसान। संघाट

हिसार के गांव सलेमाद से विकास वर्मा, भिवानी के गांव लोहाने से अशोक राय, फतेहाबाद के गांव धौल से राधे श्याम, मिरसा की डाणी शरा से रमेश भादु, बावल के खानी सुदरोज से वेद प्रकाश, सोनीपत के गांव धान-खुर्द से सरेंद्र, पंचकूली के गांव ठरवा से संदीप, करनाल के गांव डबरी से सुरभाज सिंह, जौंद से नवीन, यमुनानगर के गांव मारवा कलां से रास प्रताप सिंह, पानीपत के दुसराना से पौरस, महेंद्रगढ़ के गांव कंकाला से विरेंद्र सिंह, अंबाला के गांव खतौली से आदित्य खिंदल, कैथल के गांव चौक से अमित गोगल, रोहतक के गांव मंडौली से राजकुमार, पलवल के गांव अररगावद से रमेश कुमार, कुरुक्षेत्र के पिठोवा से प्रकाश सिंह, फरीदाबाद के गांव बहादुरपुर से कुलदीप कौशिक, झज्जर के गांव जगली से जोगिंद्र गुलतवा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डिजीटल समाचार	14-9-22	5	1-5

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला शुरू



किसानों को दिया जाएगा।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा जल का संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए इसको रखा जा सकता है सुरक्षित

लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल व्यर्थ बह जा रहा है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक आमदनी लेने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। हरियाणा सरकार और लुवास द्वारा इस रोग पर नियंत्रण पाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं जिनके चलते प्रदेश में इस बीमारी पर नियंत्रण पा लिया गया। विस्तार शिक्षा निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही विस्तार गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

एगो-इंडस्ट्रियल प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज व लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा तथा (दाएं) प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज व लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा

हिसार, 13 सितंबर (विश्वेद वर्मा): कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर अतीर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में

लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप

में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग बताते हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान की कम अवधि में पकने वाली किस्में व

बासमती किस्में उगाकर पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जल के साथ किसानों से पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने को भी कहा और उन्हें डीजल ट्रैक्टर की अपेक्षा ई-ट्रैक्टर की ओर रुख करने का आह्वान किया। इस पर सरकार की ओर से सब्सिडी भी उपलब्ध है। उन्होंने फसलों की उन्नत किस्मों के बीज की आपूर्ति का उल्लेख किया और बताया कि हकृवि ने इन किस्मों का 35000 क्विंटल बीज



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब मेसरी	14.9.22	2	1-4

कृषि मेला : किसानों ने आधुनिक कृषि यंत्रों व खेती की ली जानकारी

हिसार, 13 सितम्बर (राटी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) आज से शुरू हुआ। इस मेले के पहले दिन हजारों किसानों ने यहां पर पहुंचकर आधुनिक कृषि यंत्रों और खेती के आधुनिक तरीकों बारे कृषि वैज्ञानिकों से जानकारी ली। खास बात यह थी कि मेले में कुछ सालों से मेले में महिलाओं की तादाद बढ़ती जा रही है। इस बार भी में सैकड़ों महिलाओं ने मेले में पहुंचकर कृषि और पशुपालन की आधुनिक तकनीकों की जानकारी हासिल की। मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई। मेले में कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

इस दो दिवसीय कृषि मेला का उद्घाटन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है।

प्रो. काम्बोज ने जल संरक्षण के साथ किसानों से पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने को भी कहा और उन्हें डीजल ट्रैक्टर की अपेक्षा ई-ट्रैक्टर की



प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज व लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा

ओर रुख करने का आत्थान किया। उन्होंने फसलों की उन्नत किस्मों के बीज की आपूर्ति का उल्लेख किया और बताया कि हकूवि ने इन किस्मों का 35000 क्विंटल बीज किसानों को दिया जाएगा।

लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने कहा भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दो-तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है।

विस्तार शिक्षा निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही विस्तार गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र ने किया।

अनुसंधान फार्म का किया भ्रमण

कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से

भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग की गई प्रौद्योगिकियों बारे बताया। उन्हें मेले के विषय के अनुरूप कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारी दी।

प्रगतिशील किसान सम्मानित

हकूवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया। ये किसान परंपरागत खेती से हटकर आधुनिक तकनीक से खेती कर रहे हैं।

सम्मानित होने वाले किसानों में बावल के खानी सुंदरोज से वेदप्रकाश, सोनीपत के गांवधाना खुर्द से सतेंद्र, पंचकुला के गांवटरवा से संदीप, करनाल के गांव डबरी से गुरबाज सिंह, जींद

से नवीन, यमुनानगर के गांव मारवा कलां से राम प्रताप सिंह, पानीपत के इसराना से पोरस, हिसार के गांव सलेमगढ़ से विकास, महेन्द्रगढ़ के गांव ककराला से विरेन्द्र सिंह, अंबाला के गांव खतौली से आदित्य जिंदल, कैथल के गांव चौका से अमित गोयल, रोहतक के गांव मरोधी से राजकुमार, मंडकोला के गांव और गांवाबाद से राकेश कुमार, कुरुक्षेत्र के पेहोवा से प्रकाशसिंह, भिवानी के गांव लोहानी से अशोक शर्मा, फरीदाबाद के गांव बहादुरपुर से कुलदीप कौशिक, फतेहाबाद के गांव धौलू से राधेश्याम, सिरसा की डांगी शेरा से रमेश भादू एवं झज्जर के गांव नांगली से जोगिंद्र गुलिया शामिल हैं।

इनमें शामिल पंचकुला के किसान संदीप कुमार 20 एकड़ में आधुनिक तरीके से खेती करते हैं। 2 साल से धान की सीधी बिजाई कर रहे हैं। गन्ना, आलू, प्याज की 20 एकड़ में खेती करते हैं। सोनीपत के सतेंद्र सिंह 2 साल से जैविक खेती कर रहे हैं। सतेंद्र सिंह ने बताया कि उसकी खुद की 4 एकड़ जमीन है। बाकी करीब 25 एकड़ टैके पर लेकर खेती करते हैं।

करनाल के किसान गुरबाज सिंह विर्क 2007 से गेहूं और धान की नई किस्में ईजाद करके सीधे किसानों को बेच रहे हैं। हर साल गेहूं और बासमती की नई किस्म तैयार करके सीधे किसानों को खेत से ही बेच रहा है। वे करनाल के पहले किसान थे, जिन्होंने हैप्पी सीडर से फसलों की बिजाई शुरू की थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन क दिव्य	14.9.22	8	3-5

रबी कृषि मेले में जुटी किसानों की भीड़; कुलपति ने किया जागरूक, बोले

जल संरक्षण के लिए उचित प्रबंधन की जरूरत

हिसार, 13 सितंबर (मिड)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय रबी कृषि मेले का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन हकृषि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व लुवास के कुलपति ने डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने संयुक्त रूप से किया। मेले में पड़ोसी राज्यों के किसानों की संख्या की भी अच्छी खासी भीड़ जुटी। कृषि मेले का थीम जल संरक्षण रखा गया है।

उद्घाटन समारोह में काम्बोज ने कहा कि कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग



हिसार में रबी कृषि मेले में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हकृषि व लुवास के कुलपति। -सिड

प्रगतिशील किसानों को किया सम्मानित

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता जताई। इस मौके पर हकृषि द्वारा कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।

बताते हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के

साथ धान की कम अवधि में पकने वाली किस्में व बासमती किस्में उगाकर पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	14-9-22	4	3-7

एचएयू में कृषि मेला शुरू • पहले दिन ही किसानों की संख्या ने तोड़ा कई साल का रिकॉर्ड 71.86 हजार किसान खरीददारी और जानकारी लेने पहुंचे, पहले दिन 81 लाख के बीजों की बिक्री

भास्कर न्यूज | हिंसार

एचएयू में मंगलवार से दो दिवसीय कृषि मेला शुरू हो गया। इस बार किसानों की संख्या ने पिछले कई साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया। पहले ही दिन करीब 71.86 हजार से अधिक किसान मेले में खरीददारी और जानकारी लेने के लिए पहुंचे। मेले में 81 लाख से अधिक के बीजों की बिक्री की गई। हरियाणा के अलावा राजस्थान, झुपी और राजस्थान के किसानों ने भी मेले का लाभ उठाया। इससे पूर्व में पहले दिन करीब 40 से 50 हजार किसान ही मेले का विजिट करते थे। इस बार महिलाओं और स्टूडेंट्स में भी क्रेज रहा। प्रदेश के सभी जिलों के प्रगतिशील किसानों को भी सम्मानित किया गया। मेले में इस बार 250 से अधिक कृषि यंत्रों, बीज और अन्य की स्टॉल भी लगाई गई थी।



हिंसार। एचएयू के किसान मेले से खरीददारी कर लौटते किसान।



हिंसार। एचएयू के किसान मेले में प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि एचएयू के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज व तुवास के वीसी डॉ. विनोद कुमार वर्मा।

पहली बार ड्रोन से कराया मैदान पर पानी का छिड़काव मेले में किसानों को खेतीबाड़ी में ड्रोन के प्रयोग के बारे में भी जानकारी दी गई। कर्मचारियों ने ड्रोन से कीटनाशक के छिड़काव के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा धूल को उड़ने से रोकने के लिए ड्रोन से ही पानी का मैदान में छिड़काव कराया गया। ड्रोन से कीटनाशक के छिड़काव के बारे में किसान जानकारी लेते नजर आए।

जल संरक्षण के बारे में अवेयर किया : कृषि मेला में किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग की गई प्रौद्योगिकियों बारे बताया। उन्हें मेले के विषय के अनुरूप कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारियां दीं। कृषि मेला में किसानों के आकर्षण का केन्द्र रही एग्रो-इंडस्ट्रियल प्रदर्शनी में उन्हें हकूवि, लुवास व एमएचयू और कृषि व कृषि से संबंधित विभागों तथा प्राइवेट कंपनियों द्वारा लगाई गई स्टालों पर फसलों, सब्जियों आदि की उन्नत किस्मों, फार्म मशीनरी व यंत्रों, रसायनिक व जैविक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि के बारे में जानकारियां लीं।

डॉ. बलवान सिंह ने अतिथियों व किसानों का स्वागत किया

कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र ने किया। इस मौके पर हरियाणा में पाए जाने वाले मुख्य सूजकूमि व उनके प्रबंधन और कपास की उन्नत खेती पर एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें विमोचित की गईं।

रबी की फसलों के बीज खरीदे

मेला स्थल पर हकूवि की ओर से स्थापित बीज बिक्री केन्द्र से किसानों ने विभिन्न रबी फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई। प्रगतिशील किसानों को किया सम्मानित : इस मौके पर हकूवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।

डॉ. विनोद कुमार वर्मा विरिष्ट अतिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कहा कि जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है।

गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग बताते

हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान

की कम अवधि में पकने वाली किस्में व बासमती किस्में उगाकर पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

मेले का शुभारंभ करते हुए एचएयू के वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। कार्यक्रम में लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कुलपति



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	14.9.22	9	2-6

हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भी जुटे किसान, 35 हजार विंटल बीज उपलब्ध हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेले का आगाज

■ सुबह से ही बीज खरीद केंद्रों पर लगी रही किसानों की लंबी लाइन

हरिभूमि न्यूज ► हिंसा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मंगलवार को दो दिवसीय कृषि मेले (रबी) का आगाज हुआ। मेले में हरियाणा के अलावा उत्तर भारत के अलग-अलग राज्यों से किसान बीज खरीदने के लिए पहुंचे। विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए बीज खरीद केंद्रों पर सुबह से ही बीज खरीदने के लिए किसानों की लंबी लाइनें लगी थीं। हकृवि द्वारा तैयार बीजों की किसानों में मांग को देखते विवि प्रशासन ने पिछले साल 20 हजार विंटल बीजों के मुकाबले इस बार 35 हजार विंटल बीज खरीद के लिए किसानों को उपलब्ध करवाया गया है। इस दौरान मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी तथा पानी की जांच करवाई।

कुलपति ने किया उद्घाटन

इससे पूर्व हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि कृषि मेले का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। कृषि मेला में किसानों के एग्री-इंडस्ट्रियल प्रदर्शनी में आकर्षण का केन्द्र रही। किसानों की हकृवि, लुवास व एमएचयू और कृषि व कृषि से संबंधित विभागों तथा प्राइवेट कंपनियों की लगाई स्टालों पर फसलों, सब्जियों आदि की उन्नत किस्मों, फार्म मशीनरी व यंत्रों, रसायनिक व जैविक उर्वरकों, कीटनाशियों आदि के बारे में जानकारी हासिल करने का अवसर मिला।

जल संरक्षण समय की मांग

मेले के उद्घाटन समारोह के अवसर पर



हिंसा। प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करते मुख्यातिथि प्रो. बी. आर. काम्बोज व लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा।

फोटो: हरिभूमि



हिंसा। बीज खरीदने के लिए बीज केंद्रों पर लगी किसानों की लंबी लाइन।

फोटो: हरिभूमि

कृषि में जल को संरक्षित करना जरूरी : डॉ. वर्मा

लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन व होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल व्यर्थ बह जा रहा है। यह बहुत ही बित्त का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक आमदनी लेने के लिए खेती के सख्त पशुपालन को अछूत जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दो-तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों में गम में फैल रहे लंबी सिंकन रोग का उल्लेख करते हुए पशुपालकों से कहा कि उनको अपने थोपे पशुओं को इस रोग से बचाने के सभी उपाय व सावधानियां जपानी चाहिए।

लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा

स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित

इस मौके पर हकृवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया। इस दौरान हकृवि से जुड़कर कृषि क्षेत्र में अपना काम रोशन कर रहे वाले प्रदेश के प्रगतिशील किसानों की ओर से लगाई गई स्टाल में आगंतुकों के आकर्षण का केन्द्र बनी। इस मौके पर हरियाणा में पार जाने वाले मुख्य सुनकुमि व उनके प्रबंधन और कपास की उन्नत खेती पर हकृवि वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें विनोदित की गईं। विस्तार विद्या निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा लगाई जा रही विस्तार अभियानियों पर प्रकाश डाला।

किसानों ने अनुसंधान फार्म का किया वनण

कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का वनण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग की गई प्रौद्योगिकियों बारे बताया। उन्हें मेले के विषय के अनुरूप कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारियां दीं।

को समय की मांग बताते हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशॉर्ट विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान की कम अवधि में पकने वाली किस्में व



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नगर-सौर	13-9-22	4	1-3

कृषि मेला : किसानों ने ली फसलों, सब्जियों की उन्नत किस्मों, फार्म मशीनरी व यंत्रों, रसायनिक व जैविक उर्वरकों, कीटनाशियों की जानकारी

सम-श्री म्यूज 11-12 दिनांक किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण समाधान है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही खाने वाली पौधों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विद्या-चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीरेंद्र कामोस ने कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर भतीर मुख्यातिथि व्यक्त किए। कार्यक्रम में सहाय सचिवराज पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (सुधाम) के कुलपति डॉ. विवेक कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. कामोस ने कहा कि जल की उपलब्ध बढ़ती जात के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल को संचयित कर लेना है। नेट-आन फसल चक्र वाले क्षेत्रों में भूजल के प्रति सचेतन के कारण भी जल संचयन विचार किया जा रहा है। उपरि कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यह प्रकृतिक संसाधनों का संचयन इसी तरह जारी रखा तो खाने वाले खाद्य में विविधता से दूर हो जाए, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की कमी काभी हो सकती है। उन्होंने जल संरक्षण को जल की कमी काबू करने के लिए जल संसाधनों के संचयन प्रयोग, आधुनिक विचार, वर्षा जल संचयन, सिंचाई की उपकरण व अन्य उपकरणों जैसे आधुनिक तकनीकों के जल संचयन को संचयन में करने वाली



भाटी संख्या में जुटे किसान

कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों के किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का प्रयोग किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा तैयार की गई नई फसलों और उनके प्रयोग की प्रौद्योगिकियों को भी बताया। उन्हें मेले के दौरान के अनुभव कृषि में विविध जल के प्रबंधन और संरक्षण वाले उपयोगी जानकारी भी दी। कृषि मेला में किसानों के उत्कर्ष का केन्द्र रही एगो-इन्फोर्मेशन प्रदर्शन में उन्हें हकूमि, सुधाम व रणजयपुर और कृषि व कृषि से संबंधित विषयों तथा प्रत्येक क्षेत्रों में तैयार की गई नई नई फसलों, फार्म मशीनरी व यंत्रों, रसायनिक व जैविक उर्वरकों, कीटनाशियों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। इस दौरान हकूमि से जुड़कर कृषि क्षेत्र में अपना नाम रोशन करने वाले प्रदेश के प्रगतिशील किसानों की ओर से तैयार की गई नई नई तकनीकों के उत्कर्ष का केन्द्र बने।

किसानों व आसपास किसानों उपकरण यंत्रों का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बात किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीकों के आधुनिक टैग में बचने के लिए विभिन्न परिस्थितिक परिस्थितियों जैसे मेला जाने की विचारण, या खेत संचयन क्षेत्र और फसल विविधता, जल संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ सिंचाई की उपकरण, जल संसाधनों और जैव विविधता को बढ़ाने पर कार्य करने की आवश्यक है। उन्होंने जल के संचयन

किसानों से परीक्षण संरक्षण पर ध्यान देने की भी कहा और उन्हें एगोस टैग की अनेक 5-टैग की ओर संचयन करने का अवसर दिया। उन्होंने किसानों की उन तकनीकों के बारे में जानकारी का जलादेश करते हुए बताया कि हकूमि की इन तकनीकों का 35000 किसानों को इन तकनीकों को ज्ञान प्राप्त। सुधाम के कुलपति डॉ. विवेक कुमार वर्मा ने इस दौरान कहा कि जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल खर्च का जल है। यह

सबूत ही पिला का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक लाभदायी होने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बालकृष्ण सिंह महारा ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के सम्मान के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गयी पौधों के नमूने प्रस्तुत किए। कृषि विश्वविद्यालय के लोग डॉ. उनके सहज में संचयन प्रदर्शन करवा दिया। संचयन

किसानों ने खरीदे रबी फसलों के बीज

मेला स्थल पर हकूमि की ओर से संचयन किए गए बीज विक्री केन्द्र से किसानों ने खरीद करके विभिन्न रबी फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने सिंचाई-यंत्रों जल संचयन का लाभ उठाते हुए अपने खेत की सिंचाई व पानी की जल काबू।

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित

हकूमि की ओर से कृषि क्षेत्र में संचयन कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रगतिशील जिलों में एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।

संचयन डॉ. पुनैद ने किया। इस क्षेत्र पर संचयन में पार करने वाले मुख्य हकूमि व उनके प्रबंधन और संचयन की उपलब्धता पर हकूमि वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई नई नई तकनीकों की थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनिक भास्कर	14-9-22	5	1-8

हरियाणा

haryana.khaskhabar.com

2018-19 सत्र का प्रथम अंक

एचएचयू में किसान मेला • एमएचयू ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ वैजिटेबल रिसर्च वाराणसी के सहयोग से तैयार की किस्में नई किस्में: 7 इंच लंबी लाल भिंडी एनर्जी व लोबिया की फली प्रोटीन से भरपूर

राजेश शर्मा

रबल भिंडी और लोबिया की किस्म को देखने उभरे किसान

डेप्युटी डीन टैगो 4000 किबोटल प्रति एकड़ तक पैदावार

एचएचयू के एग्रीकल्चरल विभाग में चलाए गए एक किसान मेले में एमएचयू के सहयोग से तैयार की गई नई किस्मों का प्रदर्शन किया गया। एमएचयू के सहयोग से तैयार की गई नई किस्मों का प्रदर्शन किसान मेले में एमएचयू के सहयोग से तैयार की गई नई किस्मों का प्रदर्शन किया गया।



कृषि मेले में नई किस्मों का प्रदर्शन किया गया।

• **भिंडी:** डॉ. विद्याल ने बताया कि इस नई किस्म की पैदावार प्रति एकड़ 4000 किबोटल तक हो सकती है। इस किस्म की फली 7 इंच लंबी होती है। इस किस्म की फली प्रोटीन से भरपूर होती है। इस किस्म की फली 7 इंच लंबी होती है। इस किस्म की फली प्रोटीन से भरपूर होती है।



किसान को नई किस्मों का प्रदर्शन किया गया।

• **लोबिया:** डॉ. विद्याल ने बताया कि इस नई किस्म की पैदावार प्रति एकड़ 4000 किबोटल तक हो सकती है। इस किस्म की फली 7 इंच लंबी होती है। इस किस्म की फली प्रोटीन से भरपूर होती है। इस किस्म की फली 7 इंच लंबी होती है। इस किस्म की फली प्रोटीन से भरपूर होती है।



किसान मेले में हुए का प्रदर्शन किया गया।



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समय, दिल्ली	14-8-22	4	1-5

नई तकनीक के साथ किया कंदमताल और बन गए प्रगतिशील किसान

किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध



किसान के लगेत नै हुए निरम से निरवाई कर विविध उत्पादन



किसानों के आर्थिक राहत नै बाणकारी नै नया प्रयोग कर पड़ै सफल



किसानों के राष्ट्रीयय नै कम पानी में धान की खेती कर दिखवाई नई राह



क्यों किसी किसानों

किसानों को नए तकनीक का प्रयोग करना पड़ेगा जो नई तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होगा। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।

एकपल्लु के कृषि क्षेत्र में कृषिशास्त्री किसानों में नई तकनीक प्रसारित है। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।



कृषि क्षेत्र में कृषिशास्त्री किसान का निरीक्षण करते एकपल्लु किसानों को डॉ. राजा मंडल, लुधियाना, डॉ. विवेक कुमार पण्डा, अजमेर



श्रीमती जयम लाल हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि क्षेत्र में सुशीला बरकें बीज नै नया किसान। अजमेर



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि क्षेत्र में 12 फुट लंबी नया की किण्वन की किण्वन लाल लुधियाना अजमेर

छिड़काव से सिंचाई करने पर पानी, समय और पैसों की होगी बचत

क्यों किसी किसानों

किसानों को नए तकनीक का प्रयोग करना पड़ेगा जो नई तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होगा। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।



कृषि क्षेत्र में सिंचिकाव विधि नै निरवाई के प्रयोग की सुशीला लाल

ड्रिप सिस्टम को दुबसत रहे

किसानों को नए तकनीक का प्रयोग करना पड़ेगा जो नई तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होगा। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।

संपी बीमारी पर नियंत्रण पाने का कर रहे प्रयास : डॉ. विनोद

किसानों को नए तकनीक का प्रयोग करना पड़ेगा जो नई तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होगा। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।



किसानों को नए तकनीक का प्रयोग करना पड़ेगा जो नई तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होगा। किसान के हों, किसान नई तकनीक अपनाकर अपने भारतीय उत्पादन के विविध।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पत्र	13.09.2022	--	--

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला शुरू, हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से बड़ी संख्या में जुटे किसान



पाठकपक्ष न्यून

हिसार, 13 सितम्बर : कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (रथी) के शुभारंभ अवसर पर यतीर मुख्यअतिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (सुवास) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। मेला स्थल पर हकृवि की ओर से स्थापित किए गए बीज बिक्री केन्द्र से किसानों ने भारी मात्रा में विभिन्न रथी

फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई। इस मौके पर हकृवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया। प्रो. काम्बोज ने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के

लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग बताते हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान की कम अर्वाधि में पकने वाली किस्में व बासमती किस्में उगाकर पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा प्राकृतिक संसाधनों के अत्याधिक दोहन से बचने के लिए विभिन्न पारिस्थितिक योजनाओं जैसे मेरा पानी मेरी विरासत, हर खेत स्वच्छ खेत और फसल विविधिकरण, जल संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ मिट्टी की उर्वरता, जल संसाधनों और जैव विविधता को बढ़ाने पर कार्य करने की जरूरत है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	13.09.2022	--	--

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला शुरू, हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से जुटे किसान

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (एबी) के शुभारंभ अवसर पर पत्नी मुखाशीर्षी संतोषिता कर रहे थे। कार्यक्रम में सहला लालबहादुर पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुधियाना) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कहा जल को लगभग बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मांग घट रही है। गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल का निम्नतर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल को उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो बुरा की जाय, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने जल संरक्षण को समय की मांग बताया हुए जल संरक्षणों के बेहतर प्रयोग, वाटरलेड विकास, वर्षा जल संचय, सिंचाई की टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों के साथ धान की कम अवधि में पकने वाली किस्में व चासमती किस्में उत्पन्न पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा प्राकृतिक संसाधनों के अत्याधिक दोहन

से बचने के लिए विभिन्न पारिस्थितिक योजनाओं जैसे गेहूँ पानी गेहूँ विद्यमान, हाथ खेत स्वच्छ खेत और फसल विविधिकरण, जल संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ मिट्टी की उर्वरता, जल संसाधनों और जैव विविधता को बढ़ाने पर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने जल के साथ किसानों से गर्वोत्पन्न संरक्षण पर ध्यान देने की भी कहा और उन्हें बीजल ट्रेक्टर को अपेक्षा ई-ट्रेक्टर की ओर रुख करने का आह्वान किया। इस पर सरकार की ओर से सविभागी भी उपलब्ध है। उन्होंने फसलों की उदात्त किस्मों के बीज की उपयुक्तता का उल्लेख किया और बताया कि हकृवि ने इन किस्मों का 25000 क्विंटल बीज किसानों को दिया जाएगा। लुधियाना के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल बर्बाद हो जा रहा है। यह बहुत ही खिंचा का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवस्था से अधिक असमर्थी लेने के लिए खेती के खस-साध पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दो-तीहाई ग्रामीण समुदाय की आजीविका प्रदान करता है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों में गांव में फैल रहे लघु स्मिथन रोग का उल्लेख करते हुए पशुपालकों से कहा कि उनको अपने गोप पशुओं को इस रोग से बचाने के सभी उपाय व सावधानियां अपनाती चाहिए। हरियाणा सरकार और लुधियाना द्वारा इस रोग पर नियंत्रण देने के भरोसा प्रभावित किए जा रहे हैं जिनके चलते प्रदेश में इस



जोगारी पर नियंत्रण पा लिया गया। विस्तार शिक्षा विद्वेक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. कलवान सिंह मंडल ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के कार्यालय के लिए विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही विस्तार शोपिथियों पर प्रकाश डाला। कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाटुज ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। मंत्र का संचालन डॉ. भुविन्द ने किया। इस मौके पर हरियाणा में पाए जाने वाले मुख्य सूक्ष्ममृग व उनके प्रबंधन और कायास की उदात्त खेती पर हकृवि वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें विमोचित की गईं। भारी संख्या में जुटे किसान कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान परामर्श प्रदान किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग को गढ़ प्रौद्योगिकियों पर बताया। उन्हें मेले के विषय के अनुसंधान कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारी दी। कृषि मेला

में किसानों के आकर्षण का केंद्र रही एग्री-इन्फोस्ट्रियाल प्रदर्शनी में उठे हकृवि, लुधियाना व एमएचए और कृषि व कृषि से संबंधित विभागों तथा प्रोड्यूसर कंपनियों द्वारा लगाई गई स्टालों पर फसलों, सचिकियों आदि की उदात्त किस्मों, फसल मशीनरी व यन्त्रों, रासायनिक व जैविक उर्वरकों, फोटोसिचियों आदि के बारे में जानकारीपूर्ण होसिल करने का अवसर मिला। इस दौरान हकृवि से जुड़कर कृषि क्षेत्र में अपना नाम रोशन करने वाले प्रदेश के प्रगतिशील किसानों की ओर से लगाई गई स्टाल भी आगंतुकों के आकर्षण का केंद्र बनीं। किसानों ने खरीदे रही फसलों के बीज मेला स्थल पर हकृवि की ओर से बीज विक्री केंद्र से किसानों ने विभिन्न एबी फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई। इस मौके पर हकृवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा समाचार	13.09.2022	--	--

हकृवि के कृषि मेले में काफी संख्या में पहुंचे धरतीपुत्र

**हकृवि कुलपति
प्रो. काम्बोज व
लुवास कुलपति
डॉ. वर्मा ने किया
मेले का शुभारंभ**



चिराग टाइम्स न्यूज
हिसार। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। गेहूँ धान फसल-चक्र वाले

क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई जल व्यर्थ बह जा रहा है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक आमदनी लेने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा भारतीय

अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दो-तिहाई ग्रामीण समुदाय को आजीविका प्रदान करता है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों में गाय में फैल रहे लम्बी स्किन रोग का उल्लेख करते हुए पशुपालकों से कहा कि उनको अपने गोप पशुओं को इस रोग से बचाने के सभी उपाय व सावधानियां अपनानी चाहिए। विस्तार शिक्षा निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने अतिथियों व किसानों का स्वागत करते हुए किसानों के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही विस्तार गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र ने किया। इस मौके पर हरियाणा

में पाए जाने वाले मुख्य सूत्रकृमि व उनके प्रबंधन और कपास की उन्नत खेती पर हकृवि वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें विमोचित की गई।

भारी संख्या में जुटे किसान : कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग की गई प्रौद्योगिकियों बारे बताया। उन्हे मेले के विषय के अनुरूप कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारियां दीं।

किसानों ने खरीदे रबी फसलों के बीज : मेला स्थल पर हकृवि की ओर से स्थापित किए गए बीज विक्री केन्द्र से किसानों ने भारी मात्रा में विभिन्न रबी फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई।

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित : इस मौके पर हकृवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	13.09.2022	--	--

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला शुरू, हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में जुटे किसान

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

प्रो. काम्बोज ने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। गेहूँ धान फसल-चक्र वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है।

लुवास के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा ने भी कृषि में जल को संरक्षित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन न होने से करीब 70 प्रतिशत सिंचाई



किसानों ने खरीदे बीज व मिट्टी-पानी की करवाई जांच

कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उगाई गई खरीफ फसलों और उनके प्रयोग की गई प्रौद्योगिकियों बारे बताया। उन्हें मेले के विषय के अनुरूप कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारियां दीं। मेला स्थल पर हकृवि की ओर से स्थापित किए गए बीज बिक्री केन्द्र से किसानों ने भारी मात्रा में विभिन्न रबी फसलों के बीज खरीदे। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई। इस मौके पर हकृवि की ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रतिनिधित्व किसान को सम्मानित किया गया।

जल व्यर्थ बह जा रहा है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक आमदनी लेने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक एवं कृषि मेला संयोजक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने किसानों के कल्याण

के लिए विश्वविद्यालय द्वारा चलाई जा रही विस्तार गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर हरियाणा में पाए जाने वाले मुख्य सूत्रकृमि व उनके प्रबंधन और कपास की उन्नत खेती पर हकृवि वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें विमोचित की गईं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

आज समाज

दिनांक

14.09.2022

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--



विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला में अधिबजारीकरण व उपस्थिति को सम्बोधित करने में तुलसीबाबू।

हकृषि में 2 दिवसीय कृषि मेला शुरू

■ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा जल का संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए इसको रखा जा सकता है सुरक्षित

■ हरियाणा व पड़ोसी

राज्यों से भारी संख्या में जुटे किसान

प्रवीण कुमार

हिसार: कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

ने विश्व बैंक की धारा सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि, वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (रबी) के शुभारंभ अवसर पर चाकर मुलाखति सम्बोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में उत्तम साजनदारण चक्र विधितक एवं ससु विद्यान विश्वविद्यालय (सुबस) के कुलपति डॉ. विवेक कुमार वर्मा वित्तिव अधीन थे।

प्रो. काम्बोज ने कहा जल को सुरक्षित रखने का सबसे महत्वपूर्ण कदम ही जल का सुरक्षित रखना है।

जल को सुरक्षित रखने के लिए हमें जल को सुरक्षित रखना है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करना ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रख जा सकता है।

भारी संख्या में जुटे किसान

कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान कर्मियों का स्वागत किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा उपलब्ध की जाने वाली संख्या में अनाज के कृषि वैज्ञानिकों को बताया। उन्हें मेले के दिनों के अनुभव कृषि में निर्यात जल के प्रबंधन और संरक्षण की उपयोगी जानकारी दी। कृषि मेला में किसानों के अवसर का केन्द्र रही राष्ट्रीय अतिरिक्त प्रदर्शनी में उन्हें कृषि, तुलसी व सलाख और कृषि व कृषि के संबंधित विषयों तक संबद्ध जानकारी प्राप्त होगी। उनसे जल के प्रबंधन, कृषि व कृषि के संबंधित विषयों में अत्यधिक जानकारी प्राप्त होगी।

किसानों ने खरीदे रबी फसलों के बीज

मेला खत्म कर कृषि की ओर से जल को सुरक्षित रखने का सबसे महत्वपूर्ण कदम ही जल का सुरक्षित रखना है।

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित

इस मेले पर कृषि की ओर से कृषि क्षेत्र में अत्यधिक जानकारी प्राप्त होगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिंसा	14.09.2022	--	--

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला शुरू, हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में जुटे किसान

हिसार: कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही जाने वाली पौधों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। ये विश्वविद्यालय को ओर से आयोजित कृषि मेला (एबी) के शुभारंभ अवसर पर केंद्र मुख्यालय संबोधित कर रहे थे।

तकनीकों के साथ धूल को कम अवधि में करने वाली किरमें व घासपासी किरमें इत्यादि पानी का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कृषि प्रौद्योगिकी संसाधनों के अत्यधिक दोहन से बचने के लिए विभिन्न पारिस्थितिक संकेतकों जैसे मेरा पानी मेरी विरासत, हर खेत स्वच्छ खेत और फसल विविधकरण, जल संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ मिट्टी की

कुम्हार चर्मा ने भी कृषि में जल को सुरक्षित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा जल प्रबंधन न होने से वार्षिक 70 प्रतिशत सिंचाई जल नष्ट हो जा रहा है। यह बहुत ही चिंता का विषय है। उन्होंने कृषि व्यवसाय से अधिक आमदनी लेने के लिए खेती के साथ-साथ पशुपालन को अपनाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह ही-लिवर्हॉर्न राष्ट्रीय समुदाय की आजीवनिका प्रदान करता है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों में गाय में फैल रहे लाम्बी स्किन रोग का उपचार करते हुए पशुपालकों से कहा कि उनको अपने गेय

प्रगतिशील किसानों को किया गया सम्मानित:
इस मौके पर हकृवि को ओर से कृषि क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए प्रदेश के प्रत्येक जिला से एक प्रगतिशील किसान को सम्मानित किया गया।

की गई प्रीमियमों को भी बताया। उनके मेले के विषय के अनुक्रम कृषि में सिंचाई जल के प्रबंधन और संरक्षण बारे उपयोगी जानकारी दी। कृषि मेला में किसानों के अवकाश का केन्द्र रही एग्री-इन्फोस्ट्रियाल प्रारंभ में उनके हकृवि, तुलना व एमएचए और कृषि व कृषि से संबंधित



कार्यक्रम में सात राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (जुजाम) के कुलपति डॉ. विनोद कुमार वर्मा विशिष्ट अतिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कहा जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मांग घट रही है। पैट्रोल फसल-चाक वाले क्षेत्रों में भू-जल के अति दोहन के कारण भी जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसीलिए कृषि के लिए जल को उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो अनेक सालों समय में सिंचाई से दूर की गांव, लोगों को पीने के लिए प्रबन्ध जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने जल संरक्षण को लागू की योग्यताएं हुए जल संसाधनों के बेहतर प्रयोग, घाटलोड विकास, वर्षा जल संचयन, सिंचाई को टपका व फव्वारा सिंचाई जैसी आधुनिक



उपकरण, जल संसाधनों और जैव विविधता को बढ़ाने पर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने जल के साथ किसानों से पर्यावरण संरक्षण पर व्यक्त करने की भी कहा और उन्हें खोजल ट्रेक्टर की अपेक्षा ई-ट्रेक्टर की ओर रुख करने का आह्वान किया। इस पर सरकार की ओर से सीधे सीधी भी उपलब्ध है। उन्होंने फसलों को उन्नत किरमें के बीच की आपूर्ति का उल्लेख किया और बताया कि हकृवि ने इन किरमें का 35000 किंवाट बीच किसानों को दिया जाएगा। तुलना के कुलपति डॉ. विनोद

पशुओं को इस रोग से बचाने के सभी उपाय व सावधानियां उपलब्धी कराई। हरियाणा सरकार और तुलना द्वारा इस रोग पर नियंत्रण देने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं इनके चलते प्रदेश में इस बीमारी पर नियंत्रण पा लिया गया।

भारी संख्या में जुटे किसान
कृषि मेला में हरियाणा व पड़ोसी राज्यों से भारी संख्या में किसानों ने भाग लिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण किया जहां कृषि वैज्ञानिकों ने इनके द्वारा उगाई गई खादिर फसलों और उनके प्रयोग

विभागों तथा प्राइवेट कंपनियों द्वारा सप्लाय गई स्टालों पर फसलों, सज्जियों आदि की उन्नत किरमें, फार्म भारतीय व पशुओं, रासायनिक व जैविक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि के बारे में जानकारीपूर्ण इतिहास करने का अवसर मिला। किसानों ने खादी रबी फसलों के बीच मेला स्थल पर हकृवि की ओर से आयोजित किए गए बीच विज्ञान केन्द्र से किसानों ने भारी मात्रा में विभिन्न रबी फसलों के बीच खादी। उन्होंने मिट्टी-पानी जांच सेवा का लाभ उठाने हुए अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच करवाई।